वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 408
ISBN-978-93-82071-95-2

श्री धर्मनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

रत्नपुरी (रौनाही) में जन्मे जैनधर्म के पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक पौष शु. पूर्णिमा-15 जनवरी 2014 के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमृत महोत्सव 2013-14 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष शु. पूर्णिमा, 15 जनवरी 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में–कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी इन्हें यंत्र–मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय–समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट् कर्त्तव्य बताए हैं–

देवपूजा–गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म सार्थक होता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्र चन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 300 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 50 से अधिक विधान पूज्य माताजी के प्रकाशित हो चुके हैं और 50 विधान अभी अप्रकाशित हैं वे भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं। यह श्री धर्मनाथ विधान पूज्य माताजी ने रचकर प्रदान किया है। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को दिलाए यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

पूजा विधानों की शृँखला में यह श्री धर्मनाथ मण्डल विधान पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने रचकर नूतन कृति हमें प्रदान किया है। जिस प्रकार से शांति विधान को एक दिन में करके लोग शांतिनाथ भगवान की आराधना करते हैं। उसी प्रकार जैनधर्म के 15वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान की आराधना करने के लिए पूज्य माताजी ने श्री धर्मनाथ विधान की रचना की हैं जिसे हम एक दिन में 2-3 घंटे में कर सकते हैं।

भगवान श्री धर्मनाथ ने रत्नपुरी (रौनाही) में आज से करोड़ों वर्ष पूर्व माघ सुदी तेरस को जन्म लिया। 15 महीनों तक जहाँ रत्न की वृष्टि हुई अतः उसका रत्नपुरी नाम सार्थक हो गया। इन्द्रों ने भगवान का सुमेरु की पाण्डुकशिला पर 1008 कलशों से न्वहन करके खूब जन्मोत्सव मनाया। भगवान के शरीर की ऊँचाई एक सौ अस्सी हाथ थी। आयु दस लाख वर्ष की थी। शरीर का वर्ण स्वर्ण सदृश और चिन्ह वज्र का था। भगवान ने कर्मरूपी पर्वतों को वज्र से प्रहार की भांति चूर्ण किया था। ऐसे श्री धर्मनाथ भगवान जिन्होंने अष्टकर्मों को नष्ट करके सिद्धपद को प्राप्त कर लिया है, उनकी पूजा-आराधना से हमारे भी कर्म शीघ्र नष्ट हों, ऐसी मंगल भावना भाते रहना चाहिए।

इस श्री धर्मनाथ विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है, फिर श्री धर्मनाथ भगवान की स्तुति है। उसके बाद श्री अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा के बाद श्री धर्मनाथ भगवान की पूजा, उनके पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं 108 अर्घ्य हैं उसके बाद जयमाला है। जयमाला में पूज्य माताजी ने बहुत ही सुन्दर भाव संजोए हैं–

बहुजन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरात्मा औ अंतरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।

वास्तव में कई जन्मों के संचित पुण्य से मनुष्य जन्म मिलता है और बहुत ही पुण्य के संयोग से तीनलोक के नाथ का दर्शन प्राप्त होता है। इस विधान को करने वाले सभी भव्यजीव जिनधर्म को प्राप्त कर एक दिन संसाररूपी समुद्र से पार होएंगे। सम्पूर्ण रोग, शोक और दुःख को दूर करेंगे, ऐसी भावना पूज्य

माताजी ने इस विधान के अंत में व्यक्त की है–

जो भव्य धर्मनाथ का विधान करेंगे।
जिनधर्म प्राप्त करके वे भवसिंधु तिरेंगे।।
संपूर्ण रोग शोक दुःख दूर करेंगे।
सज्ज्ञानमती पूर्णकर शिव सौख्य भजेंगे।।

विधान की जयमाला के बाद प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित श्री धर्मनाथ भगवान की जन्मभूमि रत्नपुरी तीर्थ की पूजा है। उसके बाद भगवान श्री धर्मनाथ की एवं रत्नपुरी तीर्थ की मंगल आरती है। इस प्रकार इस विधान में 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमाला है।

यह विधान सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि के साथ इक दिन जिनगुणसम्पत्ति को भी प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

–आर्यिका सुव्रतमती (संघस्थ)

महामुनिर्व्रतगुणगुप्तिधर्मयुक्। सुतीर्थकृत् विकसित भव्यपंकजः।
सभा बभौ सुरनरसेविता च ते। मनोम्बुजे मे वस धर्मनाथ! भोः!।।1।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका चारित्रचन्द्रिका आर्यिकाशिरोमणि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक 300 से अधिक ग्रंथों का लेखन शुद्ध प्रासुक लेखनी से आगमानुसार किया है।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति पूजा-विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं, तो वे भक्ति में भावविभोर हो जाते हैं, उनके पैर थिरकने लग जाते हैं, वे भक्तिभाव से पूजा करके असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं।

चौबीस तीर्थंकरों की भक्ति में पूज्य माताजी ने चौबीसों तीर्थंकरों के विधान की रचना कर दी है। 15वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान का विधान धर्म की ध्वजा को फहराने वाला है। अनंतगुणों से युत तीर्थंकर भगवान की भक्ति अनंतगुणा फल देती है।

पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। माताजी क्वांरी कन्याओं की पथप्रदर्शिका है। वर्तमान में दीक्षित सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित हैं। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिंतामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद करने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी.लिट्. आदि अनेकों उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान है।

विधान की प्रूफरीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूरकर शीघ्र ही श्रुतज्ञान-केवलज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. श्री धर्मनाथ स्तुति	2
3. श्री अर्हंत पूजा	3
4. भगवान श्री धर्मनाथ पूजा	8
5. 108 अर्घ्य	10
6. जयमाला	25
7. प्रशस्ति	27
8. रत्नपुरी तीर्थ की पूजा	28
9. भगवान श्री धर्मनाथ की आरती	35
10. रत्नपुरी तीर्थ की आरती	36
11. तीर्थंकर श्री धर्मनाथ चालीसा	37
12. सोलह जन्मभूमि का भजन	39
13. भजन	40

मण्डल का नक्शा

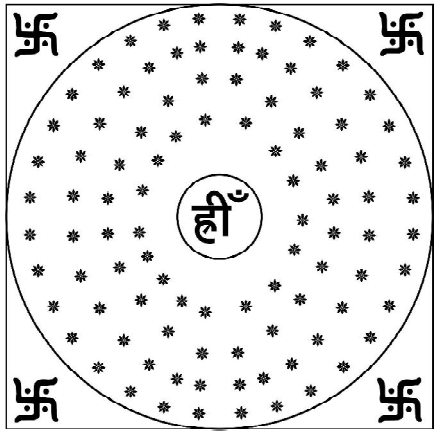

पूजा-3, कुल अर्घ्य-108, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-3

श्री धर्मनाथ विधान

मंगलाचरण

नमोऽस्तु धर्मनाथाय, धर्मतीर्थकराय ते।
धर्मचक्रेश! मे नित्यं, धर्म्यध्यानं विधीयताम्।।1।।

नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय, विनष्टदोषाय गुणार्णवाय।
विमुक्तिमार्गप्रतिबोधनाय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।2।।

जितमदहर्षद्वेषा, जितमोहपरीषहा जितकषायाः।
जितजन्ममरणरोगा, जितमात्सर्या जयन्तु जिनाः।।3।।

जय जय जय त्रैलोक्यकाण्डशोभिशिखामणे।
नुद नुद नुद स्वान्तध्वान्तं जगत्कमलार्क! नः।।
नय नय नय स्वामिन्! शांतिं नितान्तमनन्तिमां।
नहि नहि नहि त्राता लोकैकमित्र! भवत्परः।।4।।

नमूँ सुरों से अर्चित जिनवर, दोषरहित गुणसिंधु तुम्हें।
हे देवाधिदेव जिन शिवपथ, प्रतिबोधक मैं नमूँ तुम्हें।।5।।

मद अरु हर्ष द्वेष के विजयी, मोह परीषह के विजयी।
महा कषाय भटों के विजयी, भव कारण के अतःजयी।।

जन्म-मरण रोगों को जीता, मात्सर्यादिक दोषजयी।
सबको जीत कहाए तुम 'जिन', अतः रहो जयशील सही।।6।।

जय जय जय त्रैलोक्यकाण्ड के शोभित चूड़ामणि जिनवर।
मन के तम को हरो हरो, मम हरो जगत पंकज भास्कर।।
स्वामिन् ! शक्ति अनन्ती मुझको, करो करो झट करो सदा।
नहिं नहिं नहिं लोकैकमित्र प्रभु, तुम सम अन्य कोई सुखदा।।7।।

श्री धर्मनाथ स्तुति

हे धर्मधुरन्धर धर्मनाथ! धर्मामृतदायी मेघ तुम्हीं।
रत्नों की वर्षा होने से, वह रत्नपुरी थी रत्नमयी।।
यह सुतवन्ती सुप्रभावती, पितु भानुराज महिमाशाली।
वैसाख सुदी तेरस के दिन, गर्भागम उत्सव था भारी।।1।।

तिथि माघ सुदी तेरस शुभ थी, इन्द्रों ने जन्म न्हवन कीना।
उस ही तिथि में प्रभु दीक्षा ली, निज पर को पृथक्-पृथक् कीना।।
पौषी पूर्णा को ज्ञान पूर्ण, हो गया उजाला त्रिभुवन में।
शुभ ज्येष्ठ सुदी चौथी के प्रभु, शिवपद को प्राप्त किया क्षण में।।2।।

इक सौ अस्सी कर देह प्रभु! दस लाख वर्ष तिथि कनक कांति।
है वज्र चिह्न प्रभु कर्म शैल, को चूर किया तुम वज्र भांति।।
हे धर्मतीर्थ के तीर्थंकर ! तुमने यम को चकचूर किया।
मैंने भी शरणा ले तेरी, अगणित दुःखों को दूर किया।।3।।

मैं मिथ्या अविरति क्रोध-मान, माया लोभों से भिन्न सही।
ये सब औपाधिक भाव कहे, मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी।।
मैं तुमको वंदन कर करके, बस तुम जैसा ही बन जाऊँ।
प्रभु ऐसा ही वर दो मुझको, मैं स्वयं स्वयंभू बन जाऊँ।।4।।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तु।
पीयूष तुल्य चरू लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नि विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बारह हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावे)

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रविप्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।

संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।9।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री धर्मनाथ पूजा

–अथ स्थापना –गीता छंद –

श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र धर्मामृत पिला के भव्य को।
निज आत्म का दर्शन कराया, पथ दिखाया विश्व को।।
उनके चरण की वंदना कर, भक्ति से गुण गायेंगे।
आह्वान कर पूजें यहाँ, जिनधर्म प्रीति बढ़ायेंगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –नाराच छंद –

हिमाद्रि गंग नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
जिनेश पाद पद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
जिनेन्द्र धर्मनाथ के, पदारविंद मैं नमूँ।
समस्त रोग शोक मोह, राग द्वेष को वमूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अष्टगंध लेय, हर्षभाव ठानिये।
जिनेश पादपद्म चर्च, मोहताप हानिये।।जिनेन्द्र.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कमोद जीरिका अखंड, शालि धान्य लाइये।
सुपुंज आप पास दे, अखंड सौख्य पाइये।।जिनेन्द्र.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब कुंद पारिजात, पुष्प अंजली लिये।
जिनेश पाद पूज कामदेव को हनीजिये।।जिनेन्द्र.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायकामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमिष्ट लाडु फेनि व्यंजनादि भांति भांति के।
जिनेश पाद पूजते, भगे क्षुधा पिशाचि के।।जिनेन्द्र.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड ज्योतिवान दीप, स्वर्ण पात्र में जले।
जिनेन्द्र पाद पूजते हि, मोहध्वांत भी टले।।
जिनेन्द्र धर्मनाथ के, पदारविंद मैं नमूँ।
समस्त रोग शोक मोह, राग द्वेष को वमूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायमोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप लेय अग्नि-पात्र माहिं खेइये।
जिनेश सन्निधी तुरंत, कर्मभस्म होइये।।जिनेन्द्र.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इलायची लवंग दाख, औ बदाम लाइये।
जिनेश को चढ़ाय मुक्ति-वल्लभा को पाइये।।जिनेन्द्र.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अष्टद्रव्य लेय, अर्घ्य को बनाइये।
सुज्ञानमती पूर्ण हेतु, नाथ को चढ़ाइये।।जिनेन्द्र.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सरयूनदि को नीर, जिनपद में धारा करूँ।
मिले भवोदधि तीर, शांति बढ़े तिहुँलोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
मिले सौख्य अभिनंद्य, पुष्पांजलि अर्पूं सदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई –

रत्नपुरी पितु भानु महान, मात सुव्रता गर्भ निधान।
सुदि तेरस वैशाख सुरेन्द्र, जजें गर्भ कल्याण जिनेन्द्र।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस जिन जन्म, सुरपति किया महोत्सव धन्य।
नाम रखा श्रीधर्म जिनेन्द्र, जन्म कल्याण जजें शत इन्द्र।।2॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देख वैराग्य, नागदत्त पालकि बड़भाग्य।
माघ सुदी तेरस वन शाल, दीक्षा धरी नमूँ नत भाल।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्रीधर्मनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तपत्रतरु तल धर ध्यान, घात घाति ले केवलज्ञान।
समवसरण में प्रभु राजंत, पौष पूर्णिमा इन्द्र जजंत।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां श्रीधर्मनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ चतुर्थी सुदि प्रत्यूष, गिरि सम्मेद मुक्ति में तोष।
शिवकल्याणक पूजें इन्द्र, जजत मिले निज सौख्य अनिंद।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीधर्मनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

धर्मनाथ दशधर्म के, दाता जग में मान्य।
जजत मिले आतम निधी, जिसमें निजसुखसाम्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ १०८ अर्घ्य

सोरठा

समवसरण प्रभु आप, त्रिभुवन की लक्ष्मी धरे।
पूजूँ तुम चरणाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

।।इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चाल-पूजों पूजों श्री.....

'वृहद्वृहस्पति' प्रभु नाम है। सुरपति के गुरू सरनाम हैं।
पूजते ही मिले मोक्ष धाम है। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पतिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाग्मी' तुम्हीं त्रिभुवन में। शुभवचन द्वादशों गण में।
पूजते पाप नश जाय क्षण में। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।2।।

ॐ ह्रीं वाग्मिन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाचस्पती' आप जग में। वचनों के स्वामि सहज में।
नाम लेते मिले शांति मन में। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।3।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाम 'उदारधी' है। ज्ञानदान का मूल वही है।
पूजते आप सुख की मही हैं। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।4।।

ॐ ह्रीं उदारधीगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'मनीषी' कहाये। केवलज्ञान सदबुद्धि पाये।
शत इंद्र सदा गुण गायें। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।5।।

ॐ ह्रीं मनीषीगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपको ही 'धिषण' साधु कहते। सर्वज्ञानैक बुद्धी धरते।
भक्त पूजत स्वपर ज्ञान लहते। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।6।।

ॐ ह्रीं धिषणगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीमान्' त्रैलोक्य में हैं। ज्ञान पंचम धरें श्रेष्ठ ही हैं।
भक्त भी स्वात्म ज्ञानी बने हैं। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।7।।

ॐ ह्रीं धीमान्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शेमुषीश' आप ही हैं। सर्व ही ज्ञान के नाथ ही हैं।
दीजिये अब मुझे सुमती है। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।8।।

ॐ ह्रीं शेमुषीशगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'गिरांपति' जग में। सर्वभाषामयी ध्वनि भवि में।
हो सत्य महाव्रत मुझमें। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।9।।

ॐ ह्रीं गिरांपतिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'नैकरूप' मुनिगण में। विष्णु ब्रह्म महेश्वर सच में।
भक्त नाशें करमरिपु क्षण में। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।10।।

ॐ ह्रीं नैकरूपगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'नयोत्तुंग' मानें। सब नयों से श्रेष्ठ बखानें।
मन अनेकांत सरधाने। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।11।।

ॐ ह्रीं नयोत्तुंगगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' तुम्हीं त्रिभुवन में। गुण बहुते धरें प्रभु निजमें।
गुण पूर्ण भरूँ मैं निज में। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।12।।

ॐ ह्रीं नैकात्मागुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'नैकधर्मकृत्' तुम हो। बहुधर्म वस्तु के कह हो।
निजधर्म अनंत मुझे हों। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।13।।

ॐ ह्रीं नैकधर्मकृतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अविज्ञेय' ही हो। जन जानन योग्य नहीं हो।
मुझे आत्म स्वभाव प्रगट हो। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।14।।

ॐ ह्रीं अविज्ञेयगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अप्रतर्क्यात्मा'। न तर्कादि गोचर महात्मा।
मुझे कीजे तुरत अंतरात्मा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।15।।

ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'कृतज्ञ' कहे हो। सभी कृत्य तुम्हीं जानते हो।
नाथ! मुझमें यही गुण प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।16।।

ॐ ह्रीं कृतज्ञगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' आप भुवन में। वस्तु लक्षण कहते हो ध्वनि में।
मैं धारूँ सुलक्षण हृदय में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।17।।

ॐ ह्रीं कृतलक्षणगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्ञानगर्भ' तुमही हो। सब ज्ञेय सुज्ञान मही हो।
मेरा भी ज्ञान सही हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।18।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दयागर्भ' त्रिभुवन में। तुम दयासिंधु भविजन में।
मैं धरूँ दया निजपर में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।19।।

ॐ ह्रीं दयागर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'रत्नगर्भ' मुनिनाथा। रत्न वर्षे पंचदश मासा।
मैं नमूँ नमाकर माथा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।20।।

ॐ ह्रीं रत्नगर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्रभास्वर' ही हो। त्रैलोक्य प्रकाशि रवी हो।
मुझ हृदय ज्ञान ज्योती हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नितही।।21।।

ॐ ह्रीं प्रभास्वरगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मगर्भ' तुम सच में। रहे कमलाकार गरभ में।
लहूँ गर्भ प्रभो! तुम सम मैं। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मगर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगद्गर्भ' तुम भासें। तुम ज्ञान में जग प्रतिभासे।
हो ज्ञान मेरा तम नाशे। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।23।।

ॐ ह्रीं जगद्गर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमगर्भ' तुम ही हो। गर्भ बसत स्वर्णमय भू हो।
मुझ रोग शोक हर तुम हो। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।24।।

ॐ ह्रीं हेमगर्भगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुदर्शन' मानें। तुम दर्शन सुखकर जानें।
पूजत सब संकट हानें। श्रीधर्मनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।25।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-प्रहरनकलिका छंद-

प्रभु तुम 'लक्ष्मीवन्' भुवि गुरू हो।
अन्तर बहि संपद धर जिन हो।।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो।।26।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीवन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिदशअध्यक्ष' सुर गणपति हो।
त्रिभुवन धन भाने अतुल रवि हो।।तुम.।।27।।

ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु अतुल 'द्रढ़ीयन्' इस जग में।
नहिं तुम सम हो दृढ़ मुनि जग में।।तुम.।।28।।

ॐ ह्रीं द्रढ़ीयन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब त्रिभुवन ईश तुमहि 'इन' हो।
मुझ सब अघ नाशत सुखप्रद हो।।तुम.।।29।।

ॐ ह्रीं इनगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समरथयुत 'ईशित' तुमहि कहे।
मुझ अहित निवारण तुम पद हैं।।तुम.।।30।।

ॐ ह्रीं ईशितृगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मनोहर' त्रिभुवन में।
हरि हर परब्रह्म न तुम सम हैं।।तुम.।।31।।

ॐ ह्रीं मनोहरगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु सुभग 'मनोज्ञांग' अतिशय ही।
भवि जपत तुम्हें दुख विनशत ही।।तुम.।।32।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञांगगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय धृति 'धीर' भविक गण में।
तुम जपत हि पीर टरत क्षण में।।तुम.।।33।।

ॐ ह्रीं धृतिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय 'गम्भीर शासन' जग में।
शिवपद कर धर्म शरण जग में।।तुम.।।34।।

ॐ ह्रीं गम्भीरगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभय 'धरमयूप' शुभ धरम हो।
सुर सुखप्रद नाथ! मुकति गृह हो।।

तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो।।35।।

ॐ ह्रीं धर्मयूपगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहिं 'दयायाग' सुखप्रद हो।
सब अशुभ हरो सुअभयप्रद हो।।तुम.।।36।।

ॐ ह्रीं दयायागगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'धरमनेमि' जिनवर हो।
इस जग मधि आप, धरम धुरि हो।।तुम.।।37।।

ॐ ह्रीं धरमनेमिगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मुनिश्वर' मुनिपति हो।
सब गुण मणि भूषित सुखनिधि हो।।तुम.।।38।।

ॐ ह्रीं मुनीश्वरगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धरमचक्रायुध' यम अरि हो।
तुम दरसन से मुझ अघ क्षय हो।।तुम.।।39।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजगुणरत 'देव' सुरगप्रद हो।
मुझ गुणमणि देव परमगति हो।।तुम.।।40।।

ॐ ह्रीं देवगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'करमहा' अघरिपु हन हो।
समरस सुखदा शिवतियपति हो।।तुम.।।41।।

ॐ ह्रीं कर्महागुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'धरमघोषण' शिव भरता।
अतिशय शिव के गुणमति करता।।तुम.।।42।।

ॐ ह्रीं धर्मघोषणगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'अमोघवच' जगत में।
तुम विरथ न वाक्य कबहुँ सच में।।तुम.।।43।।

ॐ ह्रीं अमोघवाचगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन मधि 'अमोघाज्ञ' तुमहि हो।
निष्फल नहिं आज्ञा सुर शिर धरयो।।तुम.।।44।।

ॐ ह्रीं अमोघाज्ञगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जिनवर 'निर्मल' शुचिकर हो।
मल विरहित कर्म रहित शिव हो।।तुम.।।45।।

ॐ ह्रीं निर्मलगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सु 'अमोघशासन' तुम हो।
नहिं निष्फल शासन कबहुंक हो।।तुम.।।46।।

ॐ ह्रीं अमोघशासनगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'सुरूप' असुर सुर में।
नहिं तुम सम रूप दिखत जग में।।तुम.।।47।।

ॐ ह्रीं सुरूपगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुभग' महाप्रभु अतिशय हो।
बहुविध शुभ ऐश्वर गुण युत हो।।तुम.।।48।।

ॐ ह्रीं सुभगगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुछ पर त्याग वनन विचरें।
जिनवर तुम 'त्यागि' सुरन उचरें।।तुम.।।49।।

ॐ ह्रीं यागिगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर समय जानकर शिव भये।
अनुपम प्रभु 'ज्ञातृ' शिवप्रद भये।।तुम.।।50।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-इन्द्रवज्रा-

स्वामी 'समाहित' सुसमाधि ध्यानी।
प्राणी समाधान लहें तुम्हीं से।।
श्री धर्म तीर्थंकर को जजूं मैं।
मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।51।।

ॐ ह्रीं समाहितगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुस्थित' सुख से निवासा।
मुक्तीरमा आप स्वयं वरे हैं।।श्री.।।52।।

ॐ ह्रीं सुस्थितगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरोग्य आत्मा प्रभु 'स्वास्थ्यभाक्' हो।
संसार व्याधी नहिं पूर्णस्वस्था।।श्री.।।53।।

ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाक्गुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' स्वामी भवरोग नाहीं।
आत्मस्थ हो सर्वविकार शून्या।।श्री.।।54।।

ॐ ह्रीं स्वस्थगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नीरजस्को' नहिं कर्मधूली।
मेरे प्रभो! कर्म समूल नाशो।।श्री.।।55।।

ॐ ह्रीं नीरजस्कोगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निरुद्भव' जग में कहाते।
संपूर्ण ही उत्सव इंद्र कीने।।श्री.।।56।।

ॐ ह्रीं निरुद्भवगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम्हीं कर्म 'अलेप' मानें।
मेरे सभी लेप हटाय दीजे।।श्री.।।57।।

ॐ ह्रीं अलेपगुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निष्कलंकात्मन्' इन्द्र पूजें।
मैं भी सदा शीश नमाय वंदूँ।।श्री.।।58।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मन्गुणसमन्वितायश्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वीतरागी' गतराग द्वेषा।
रागादि मेरे मन से हटा दो।।श्री.।।59।।

ॐ ह्रीं वीतरागीगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'गतस्पृह' तुम ही यहाँ पे।
इच्छा निवारी जग के गुरू हो।।श्री.।।60।।

ॐ ह्रीं गतस्पृहगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सु 'वश्येन्द्रिय' आप ही हैं।
पाँचों ही इन्द्री वश में किया था।।श्री.।।61।।

ॐ ह्रीं वश्येंद्रियगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानें 'विमुक्तात्मन्' आप ही हो।
कर्मारि बन्धन तुम काट डाले।।श्री.।।62।।

ॐ ह्रीं विमुक्तात्मन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'निःसपत्ना' नहिं शत्रु कोई।
सम्पूर्ण प्राणी तुम मित्र मानें।।श्री.।।63।।

ॐ ह्री निःसपत्नगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता स्व इन्द्रीय 'जितेन्द्रिय' हो।
जीतूं स्व इन्द्री प्रभु शक्ति देवो।।श्री.।।64।।

ॐ ह्रीं जितेंद्रियगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण शांतीश 'प्रशांत' माने।
वंदूँ तुम्हें शान्ति मिले मुझे भी।।श्री.।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशांतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आनन्तधामर्षि' ऋषि गणों में।
तेजस्विता आप अनन्त धारो।।श्री.।।66।।

ॐ ह्रीं अनन्तधामर्षिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी यहाँ 'मंगल' आप ही हैं।
नाशो अमंगल भवि प्राणियों के।।श्री.।।67।।

ॐ ह्रीं मंगलगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापारि नाशा 'मलहा' कहाये।
सम्पूर्ण धोये मल कर्म जैसे।।
श्री धर्म तीर्थंकर को जजूं मैं।
मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।68।।

ॐ ह्रीं मलहागुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अनघ' पाप निमूल नाशा।
कीजे सभी पाप विनाश मेरा।।श्री.।।69।।

ॐ ह्रीं अनघगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुये 'अनीदृक्' नहिं आप जैसा।
इन्द्रादि वन्दे रुचि से तुम्हें ही।।श्री.।।70।।

ॐ ह्रीं अनीदृक्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'उपमाभुत' इन्द्र भी तो।
दें आपकी तो उपमा तुम्हीं से।।श्री.।।71।।

ॐ ह्रीं उपमाभूतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव्य भाग्योदय हेतु स्वामी।
'दिष्टी' कहाते जग में इसी से।।श्री.।।72।।

ॐ ह्रीं दिष्टिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दैव' प्राणी शुभ भाग्य होते।
वंदूँ तुम्हें दैव समस्त नाशूँ।।श्री.।।73।।

ॐ ह्रीं दैवगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यज्ञानी नभ में विहारी।
होते 'अगोचर' नहिं सर्व जानें।।श्री.।।74।।

ॐ ह्रीं अगोचरगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य 'अमूर्त' स्वामी।
आत्मा अमूर्तीक मिले मुझे भी।।श्री.।।75।।

ॐ ह्रीं अमूर्तगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सुखमा-छंद-

'मूर्तीमन्' की पूजा करिये।
नाहीं मन में शंका धरिये।।
धर्मनाथ को पूजूँ नित ही।
व्याधी तन से भागे झट ही।।76।।

ॐ ह्रीं मूर्तिमन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

'एक' तुम्हें ही साधू कहते।
दूजा नहिं कोई भी तुमसे।।धर्म.।।77।।

ॐ ह्री एकगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानागुण की पूर्ती तुम में।
स्वामी तुम ही 'नैक' जगत में।।धर्म.।।78।।

ॐ ह्रीं नानैकगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नानैकतत्त्वदृक्' तुम ही।
आत्मा तज ना देखे कुछ ही।।धर्म.।।79।।

ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृक्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यातमगम्या' हो प्रभु जी।
आत्म ग्रंथ से जाने मुनि जी।।धर्म.।।80।।

ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्यगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

माने 'अगम्यात्मा' तुम हो।
मिथ्यादृश ना जाने तुम को।।धर्म.।।81।।

ॐ ह्रीं अगम्यात्मागुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगविद्' की जो शरणे।
मुक्तीतिय को निश्चित परणे।।धर्म.।।82।।

ॐ ह्रीं योगविद्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ् 'योगिवंदित' हो जग में।
योगि जन ध्याते भी मन में।।।धर्म.।।83।।

ॐ ह्रीं योगिवंदितगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' व्यापा त्रै जग को।
सो ही ज्ञान अपेक्षा समझो।।
धर्मनाथ को पूजूँ नित ही।
व्याधी तन से भागे झट ही।।84।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रगगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' हो जग में।
तिष्ठो नित ना नाश स्वप्न में।।धर्म.।।85।।

ॐ ह्रीं सदाभावीगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'त्रिकालविषयार्थ' सुदृक् ही।
त्रैकालिक जाना सब कुछ ही।।धर्म.।।86।।

ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंकर' भी भव्यन सुख दो।
नाशो मुझ दोषादी दुख को।।धर्म.।।87।।

ॐ ह्रीं शंकरगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंवद' शं सौख्यं कर ही।
तीनों जग में वंदे मुनि भी।।धर्म.।।88।।

ॐ ह्रीं शंवदगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! चित्त अश्व को जीता।
'दांत' कहाये धर्म समेता।।धर्म.।।89।।

ॐ ह्रीं दांतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! 'दमी' इंद्रियाँ दमते।
पूरी मन की इच्छा करते।।धर्म.।।90।।

ॐ ह्रीं दमिन्गुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' मानें तुमही।
ध्याते तुम को मृत्यु नशे ही।।धर्म.।।91।।

ॐ ह्री क्षान्तिपरायणगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अधिप' बखाने जग में।
इंद्रादिक पूजें आनन्द में।।धर्म.।।92।।

ॐ ह्रीं अधिपगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'परमानंद' तृप्त हो।
आत्मा मुझ आनंद मगन हो।।धर्म.।।93।।

ॐ ह्रीं परमानंदगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाथ! 'परात्मज्ञ' अतुल ही।
जाना पर को आत्मा निज भी।।धर्म.।।94।।

ॐ ह्रीं परात्मज्ञगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'परात्पर' भी जग में।
श्रेष्ठो मधि श्रेष्ठाधिप सब में।।धर्म.।।95।।

ॐ ह्रीं परात्परगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगद्वल्लभ' तुम हो।
तीनों जग के मनभावन हो।।धर्म.।।96।।

ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

स्वामी तुम 'अभ्यर्च्य' सुरन से।
सौ इंद्रन से साधू गण से।।धर्म.।।97।।

ॐ ह्रीं अभ्यर्च्यगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगन्मंगलोदय' हो।
तीनों जग में मंगल कर हो।।धर्म.।।98।।

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' तुम हो।
सौ इंद्रन से पूज्य चरण हो।।धर्म.।।99।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रीलोकाग्रशिखामणि' जिन हो।
लोक शिखर से चूड़ामणि हो।।धर्म.।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अंतकृत' दुःख को नाशिया।
जनम मृत्यु का भी समापन किया।।
जजूं धर्मेतीर्थेश को भक्ति से।
पियूं आत्म पीयूष भी युक्ति से।।101।।

ॐ ह्रीं अंतकृतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'कांतगू' श्रेष्ठ वाणी धरो।
मुझे हो वचोसिद्धि ऐसा करो।।जजूँ.।।102।।

ॐ ह्रीं कांतगुगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महारम्य सुंदर प्रभो! 'कांत' हों।
त्रिलोकीपती साधु में मान्य हो।।जजूँ.।।103।।

ॐ ह्रीं कांतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'चिंतामणी' रत्न हो।
सभी इच्छती वस्तु देते सदा।।जजूँ.।।104।।

ॐ ह्रीं चिंतामणिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभीष्टद' अभीप्सित लहें भक्त ही।
मुझे दीजिये नाथ! मुक्ती मही।।जजूँ.।।105।।

ॐ ह्रीं अभीष्टदगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न जीते गये हो 'अजित' आप हो।
प्रभो! मोह जीतूँ यही शक्ति दो।।जजूँ.।।106।।

ॐ ह्रीं अजितगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितकामअरि' लोक में।
विषय काम क्रोधादि जीता तुम्हीं।।जजूँ.।।107।।

ॐ ह्रीं जितकामारिगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमित' माप होता नहीं आपका।
अनंते गुणों की खनी आप हो।।जजूँ.।।108।।

ॐ ह्रीं अमितगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

वृहद्वृहस्पति आदि नाम सौ, भक्ति भाव से नित मैं पूजूँ।
सर्व अमंगल दोष नशाकर, आधि व्याधि संकट से छूटूँ।।
भूत प्रेत डाकिनि शाकिनि भी, तुम भक्तों से दूर भगे हैं।
नित नव मंगल संपति संतति यश भाग्योदय श्रेष्ठ जगे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिअष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय नमः।

(108 बार सुंगधित पुष्प या लवंग से जाप्य करना)

जयमाला

–दोहा –

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
धर्मनाथ तुमको नमूँ, करूँ भक्ति भर सेव।।1।।

–गीता छंद –

जय जय जिनेश्वर धर्म तीर्थेश्वर जगत विख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के, भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते, त्रैलोक्य के चूड़ामणी।
जय जय सकल जग में तुम्हीं, हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।2।।

एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव, औ भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।3।।

बहुजन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरातमा औ अंतरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।4।।

तुम सकल परमात्मा बने, जब घातिया आहत हुए।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा, प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुए।।
फिर शेष कर्म विनाश करके, निकल परमात्मा बने।
कल–देहवर्जित निकल अकल, स्वरूप शुद्धात्मा बने।।5।।
हे नाथ! बहिरात्मा दशा को, छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूँ।।6।।

प्रभु के अरिष्टसेन आदिक, तेतालीस गणीश हैं।
व्रत संयमादिक धरें चौंसठ, सहस श्रेष्ठ मुनीश हैं।।
सुव्रता आदिक आर्यिका, बासठ सहस चउ सौ कहीं।
दो लाख श्रावक श्राविका, चउलाख जिनगुणभक्त ही।।7।।

इक शतक अस्सी हाथ तनु, दश लाख वर्षायू कही।
प्रभु वज्रदंड सुचिन्ह है, स्वर्णिम तनू दीप्ती मही।।
मैं भक्ति से वंदन करूँ, प्रणमन करूँ शत-शत नमूँ।
निज ''ज्ञानमति'' कैवल्य हो, इस हेतु ही नितप्रति नमूँ।।8।।

–दोहा –

तुम प्रसाद से भक्तगण, हो जाते भगवान।
अतिशय जिनगुण पायके, हो जाते धनवान।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्य धर्मनाथ का विधान करेंगे।
जिनधर्म प्राप्त करके वे भवसिंधु तिरेंगे।।
संपूर्ण रोग शोक दुःख दूर करेंगे।
सज्ज्ञानमती पूर्ण कर शिव सौख्य भजेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालीस जगत्प्रसिद्ध ।
पौष शुक्ल पूर्णातिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
धर्मनाथ विधान यह, भरे सौख्य संपूर्ण।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति श्रीधर्मनाथविधानं संपूर्णं ।)
वर्द्धतां जिनशासनं ।

रत्नपुरी तीर्थ पूजा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (कुसुमलता छन्द)

श्री तीर्थंकर धर्मनाथ ने, रत्नपुरी में जन्म लिया।
धर्मतीर्थ का वर्तन करके, जन्मभूमि को धन्य किया।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर की, उस जन्मभूमि को वन्दन है।
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण विधी से अर्चन है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् ।

अष्टक

शीतल झरनों का जल पीकर, तत्काल प्यास कुछ शांत हुई।
पर पुनः प्यास लग जाने से, वह इच्छा फिर से जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, की पूजन को जल लाया हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस लेपन करने से भी, दाह न मेरी शान्त हुई।
बस उसका असर क्षीण होते ही, दाह पुनः प्रारम्भ हुई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को चन्दन लाया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्षण क्षय होती काया में, अक्षय इक आत्मतत्व ही है।
इस काया से तप कर अखंड, मिलता परमात्मतत्त्व भी है।।

इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को अक्षत लाया हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियविषयों को भोग भोग कर, बहुत बार छोड़ा मैंने।
उनको तज यदि ले लिया योग, कुछ कर्मबन्ध तोड़ा मैंने।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फूलों का गुच्छा लाया हूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित पकवानों को खाकर, तन की तो क्षुधा कुछ शांत हुई।
पर पुनः भूख लग जाने से, फिर क्षुधा की बाधा जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, नैवेद्यथाल भर लाया हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योति से भरे हुए, संसार में यद्यपि रहता हूँ।
अन्तर्ज्योती नहिं प्राप्त हुई, भवभ्रमण तभी मैं करता हूँ।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, घृतदीपक भर कर लाया हूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल सुगंधि के लिए प्रभो! मैंने बहु धूप जलाई है।
नहिं कर्मनाश के लिए प्रभो! युक्ती मेरे मन आई है।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, मैं धूप बनाकर लाया हूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मौसम के फल खाकर मैंने, तन मन को कुछ तृप्त किया।
नहिं पूजन में फल चढ़ा तभी, शिवफल बिन मन संतप्त रहा।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फल थाल सजाकर लाया हूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
चन्दनामती मैं पद अनर्घ्य, पाने का भाव बना लाया।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी को, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले ज्ञान साम्राज्य, तिहुंजग में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
तीर्थ अर्चना लाभ, पाऊँ सुख संपति भरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

रत्नपुरी तीर्थ के अर्घ्य

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर सोने की.....

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
वैशाख सुदी तेरस को जहाँ, धनपति ने रतन बरसाया।
प्रभु धर्मनाथ का गर्भकल्याणक, उत्सव खूब मनाया।।उत्सव.....
पितु भानु मात सुव्रता के मन में, आनंद अद्भुत छाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।1।।

उस गर्भकल्याणक से पवित्र, धरती को शत वन्दन है।
सरयू तट निकट अयोध्या के, वह बसा तीर्थ पावन है।। वह बसा.....
बस उसी रत्नपुरि नगरी को, मैं अर्घ्य चढ़ाने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भकल्याणकपवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।
शुभ माघ शुक्ल तेरस के दिन, जहाँ धर्मनाथ प्रभु जन्मे।
ऐरावत हाथी पर चढ़कर, सौधर्म इन्द्र वहाँ पहुँचे।।सौधर्म...
जिनबालक को लख प्रथम शची का रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।1।।
कर मेरु शिखर पर जन्मोत्सव, वस्त्राभूषण पहनाये।
उस जन्मकल्याणक नगरी की, पूजा करने सब आये।।पूजा.....
मैं भी उस पावन जन्मभूमि का वन्दन करने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मकल्याणकपवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

श्रीरत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
प्रभु धर्मनाथ तीर्थंकर ने, जहाँ उल्कापात को देखा।
सब राजपाट तज दिया तुरत, फिर मुड़कर भी नहिं देखा।।फिर.....
शुभ माघ सुदी तेरस को ही मन में वैराग्य समाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।1।।
जिस धरती पर लौकांतिक देवों का आगमन हुआ था।
जहाँ नमः सिद्ध कह धर्मनाथ ने, मुनिव्रत ग्रहण किया था।। मुनिव्रत.....
उस रत्नपुरी के कण-कण को मैंने यह अर्घ्य चढ़ाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथदीक्षाकल्याणकपवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया ।। टेक. ।।
जिस नगरी के उपवन में प्रभु को, केवलज्ञान हुआ था।
जहाँ समवसरण की रचना का, तत्क्षण निर्माण हुआ था। तत्क्षण.....
कर घातिकर्म का नाश जहाँ निज को भगवान बनाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।1।।
जहाँ पौष शुक्ल पूनम के दिन, दिव्यध्वनि प्रभु ने खिराई।
ऊँकारमयी निजवाणी से, जन-जन की प्यास बुझाई।।जन जन की.....
उस ज्ञानभूमि को अर्घ्य चढ़ाकर रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्ररत्नपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं.....।।4।।

-पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)-

पन्द्रहवें जिनवर धर्मनाथ के, जहाँ चार कल्याण हुए।
सम्मेदशिखर को वंदूँ मैं, जहाँ से वे प्रभु शिवधाम गये।।
मैं उन चारों कल्याणक से, पावन धरती को नमन करूँ।
पूर्णार्घ्य थाल ले रत्नपुरी को, अर्पण कर मैं नमन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- **ॐ ह्रीं रत्नपुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत-श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

-शेरछन्द-

श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वन्दना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।टेक.।।

सौ इन्द्र भी तीर्थंकर के पद कमल जजें।
गणधर गुरु भी गुण का वर्णन न कर सकें।।

श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।1।।

पाँचों ही कल्याणक जिन्हों के देव मनाते।
उत्सवविशेष जन्मकल्याणक में रचाते।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।2।।

यह पुण्य भी सौधर्म इन्द्र का विशेष है।
तीर्थंकरों के पंचकल्याणक मनाते हैं।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।3।।

वे विक्रिया पृथक् करें अपने शरीर की।
निज स्वर्ग में रहता है असली शरीर ही।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।4।।

जब रत्नपुरी में भी धर्मनाथ जी जनमे।
सौधर्म इन्द्र स्वर्ग से तुरत वहाँ पहुँचे।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।5।।

चारों ही कल्याणक मनाये देवों ने आके।
सम्मेदशिखर से प्रभू निर्वाण गये थे।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।6।।

उस रत्नपुरी तीर्थ से इतिहास इक जुड़ा।
देवों के द्वारा निर्मित मंदिर वहाँ मिला।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।7।।

दर्शनकथा में हुई ख्यात जो मनोवती।
दर्शन मिले रतनपुरी में धन्य वो सती।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।8।।

है आज भी मंदिर वहाँ प्रभु धर्मनाथ का।
तिथि माघ शुक्ल तेरस मेला लगा करता।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।9।।

मैं रत्नपुरी तीर्थ को पूर्णार्घ्य समर्पूं।
निजभाव तीर्थ प्राप्त हेतु नाथ को अर्चूं।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।10।।

प्रभु जन्मभूमि पूजन से जन्म सफल हो।
फिर ''चन्दनामती'' सभी पुरुषार्थ सफल हों।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छन्द-

जो भव्यप्राणी जिनवरों की जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में ''चंदना'' वे आएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री धर्मनाथ की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मन डोले, मेरा तन डोले.....

जय धर्म प्रभू, करूणासिन्धू की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया ।।टेक.।।

पन्द्रहवें तीर्थंकर जिनवर, धर्मनाथ सुखकारी।
तिथि वैशाख सुदी तेरस, गर्भागम उत्सव भारी।।
प्रभू गर्भागम उत्सव भारी.....
सुप्रभावती, माता हरषीं, पितु धन्य भानु महाराज थे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।जय धर्म.....।।1।।

रत्नपुरी में रत्न असंख्यों, बरसे प्रभु जब जन्मे।
गिरि सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्र न्हवन शुभ करते।।
प्रभू जी इन्द्र .....
कर जन्मकल्याणक का उत्सव, महिमा गाएं जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।जय धर्म.....।।2।।

वैरागी हो जब प्रभु ने, दीक्षा की मन में ठानी।
लौकान्तिक सुर स्तुति करके, कहें तुम्हें शिवगामी।।
प्रभू जी कहें.....
कह सिद्ध नमः, दीक्षा धारी, मुनियों में श्रेष्ठ महान थे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।जय धर्म.....।।3।।

केवलज्ञान प्रगट होने पर, अर्हत् प्रभु कहलाए।
द्वादश सभा रची सुर नर मुनि, ज्ञानामृत को पाएं।।
प्रभू जी ज्ञानामृत को पाएं.....
केवलज्ञानी, अन्तर्यामी, कैवल्यरमापति नाथ की
मैं आज उतारूँ आरतिया।।जय धर्म.....।।4।।

ज्येष्ठ सुदी शुभ आई चतुर्थी, शिवपद प्राप्त किया था।
श्री सम्मेदशिखर गिरिवर से, शिवपद प्राप्त किया था।।
प्रभू जी शिवपद.....
''चंदनामती'' तव चरण नती, कर पाऊँ सुख साम्राज्य भी
मैं आज उतारूँ आरतिया।। जय धर्म.....।।5।।

रत्नपुरी तीर्थ की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–यदि भला किसी का.....

तीर्थंकर प्रभु श्री धर्मनाथ की, जन्मभूमि को नमन करें।
आरति के माध्यम से आओ, अपने कर्मों का हनन करें।।टेक.।।

पन्द्रहवें जिन श्री धर्मनाथ ने, रत्नपुरी में जन्म लिया।
इन्द्रों ने स्वर्गों से आकर, उत्सव कर नगरी धन्य किया।।
प्रभु धर्मनाथ को वंदन कर, उन मात-पिता को नमन करें।
आरति के माध्यम से.....।।1।।

चारों कल्याणक से पावन, है रत्नपुरी नगरी प्यारी।
लौकान्तिक सुर भी जिसे नमें, गौरव गरिमा उसकी न्यारी।।
तीरथ की कीरत गाकर हम, अपने जीवन को सफल करें।
आरति के माध्यम से.....।।2।।

उस रत्नपुरी तीरथ से इक, इतिहास जुड़ा सुन लो भाई।
देवों के द्वारा निर्मित मन्दिर, वहाँ मिला था सुखदायी।।
सति मनोवती की दर्श प्रतिज्ञा, का अन्तर में मनन करें।
आरति के माध्यम से.....।।3।।

है आज भी मंदिर वहाँ बना, प्रभु धर्मनाथ जी राजे हैं।
मेला लगता तिथि माघ शुक्ल, तेरस को सब जन आते हैं।।
है नगरि अयोध्या निकट तीर्थ, हर कण को शत-शत नमन करें।।
आरति के माध्यम से.....।।4।।

श्री धर्मनाथ की जन्मभूमि, शुभ रत्नपुरी तीरथ को नमन।
निज भाव तीर्थ की प्राप्ति हेतु, जिननाथ का करना है अर्चन।।
''चंदनामती'' प्रभु आरति से, मानव जीवन को सफल करें।
आरति के माध्यम से.....।।5।।

तीर्थंकर भगवान श्री धर्मनाथ चालीसा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

-दोहा-

धर्मनाथ तीर्थेश को, वन्दूँ बारम्बार।
धर्मध्यान को प्राप्त कर, हो जाऊँ भवपार।।1।।
धर्मनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार।
पढ़ो सभी भव्यात्मा, करो आत्म उद्धार।।2।।

-चौपाई-

जय जय धर्मनाथ तीर्थंकर, जय जय धर्मधाम क्षेमंकर।।1।।
जय इस युग के धर्म धुरन्धर, धर्मनाथ प्रभु विश्वहितंकर।।2।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर जिनवर, जिनशासन के तुम हो भास्कर।।3।।
रत्नपुरी में जनमें प्रभुवर, रत्नों की वर्षा हुई सुखकर।।4।।
भानुराज पितु मात सुप्रभा, भाग्य खिला था उन दोनों का।।5।।
सित वैशाख सुतेरस के दिन, हुआ महोत्सव प्रभु गर्भागम।।6।।
रत्नवृष्टि छह मास पूर्व से, होने लगी मात महलों में।।7।।
धनकुबेर प्रतिदिन आते थे, रत्नवृष्टि कर हरषाते थे।।8।।
माघ सुदी तेरस तिथि आई, तीन लोक में खुशियाँ छाईं।।9।।
सौधर्मेन्द्र रतनपुरि आया, प्रभु का जन्मकल्याण मनाया।।10।।
ले गया प्रभु को पाण्डुशिला पर, किया जन्म अभिषेक प्रभू पर।।11।।
क्षीरोदधि से जल भर लाये, सहस आठ कलशा ढुरवाये।।12।।
यह जन्मोत्सव देखा जिनने, अपना जन्म सफल किया उनने।।13।।
चारणमुनि भी गगन विहारी, अभिषव देख हुए खुश भारी।।14।।
सबने पुनः झुलाया पलना, उस क्षण का वर्णन क्या करना।।15।।
पालनहार पालना झूले, उन्हें देख सब निज दुख भूले।।16।।
बालक खेल-खेलने आते, प्रभु के संग फूले न समाते।।17।।
बालपने से युवा बने जब, मात-पिता ने ब्याह किया तब।।18।।
सद्गृहस्थ बन राज्य चलाया, आर्यखण्ड का मान बढ़ाया।।19।।

उल्कापात देख मन आया, तजूँ जगत की ममता माया।।20।।
अतः हृदय वैराग्य समाया, दीक्षा लेना मन में भाया।।21।।
स्वर्ग से लौकान्तिक सुर आये, प्रभु दीक्षाकल्याण मनायें।।22।।
जन्मतिथी ही दीक्षा धारी, माघ शुक्ल तेरस सुखकारी।।23।।
एक सहस राजा सह दीक्षित, हुए शालवन में प्रभु स्थित।।24।।
एक वर्ष के बाद उन्होंने, पौष शुक्ल पूर्णिमा तिथी में।।25।।
केवलज्ञान प्रभू ने पाया, समवसरण धनपति ने बनाया।।26।।
दिव्यध्वनि का पान कराया, भव्यों को शिवपथ बतलाया।।27।।
पुनः गये सम्मेदशिखर पर, योग निरोध किया तन सुस्थिर।।28।।
ज्येष्ठ सुदी सुचतुर्थी तिथि में, मोक्ष प्राप्तकर शिवपुर पहुँचे।।29।।
इन्द्र मोक्षकल्याण मनाएँ, भस्म स्वर्गपुरि तक ले जाएं।।30।।
पंचकल्याणक युक्त जिनेश्वर, वन्दूँ धर्मनाथ परमेश्वर।।31।।
रत्नपुरी में चार कल्याणक, गर्भ जन्म तप ज्ञान कल्याणक।।32।।
गिरि सम्मेद मोक्षकल्याणक, सिद्धक्षेत्र कहलाता शाश्वत।।33।।
नमन करूँ इन तीरथद्वय को, धर्मनाथ तीर्थंकर प्रभु को।।34।।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या जी के, निकट ही रत्नपुरी तीरथ है।।35।।
सार्थक नाम हुआ नगरी का, जुड़ा कथानक रत्नवृष्टि का।।36।।
सती मनोवति दर्शप्रतिज्ञा, रत्नपुरी में हुई पूर्णता।।37।।
देवों ने जिनमंदिर रचकर, गजमोती के पुंज भी रखकर।।38।।
मनोवती को दर्श कराया, नियम का चमत्कार दिखलाया।।39।।
उस तीरथ का वन्दन कर लो, अपने मन को पावन कर लो।।40।।

चालीसा चालीस दिन, करो करावो भव्य।
धर्मनाथ प्रभु पद नमन, कर पावो सुख नव्य।।1।।
ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, नाम जगत में ख्यात।
उनकी शिष्या चन्दना-मती आर्यिका मात।।2।।
रचा धर्मतीर्थेश का, चालीसा सुखकार।
धर्मरुची प्रगटित करो, पढ़ो लहो सुखसार।।3।।

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।।
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।1।।
श्रावस्ती में संभव कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।2।।
पुष्पदन्त काकन्दी शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।3।।
कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमि वंदन कर लो।। चलो.।।4।।
राजगृही में मुनिसुव्रत नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।5।।
गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से ही ''चन्दनामती'' सिद्धि वर लो।। चलो.।।6।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।। टेक.।।

कहते हैं इस गिरि की वन्दना से,
तिर्यंच नरकायु मिलती नहीं है।
श्रद्धा सहित इसकी अर्चना से,
भव्यत्व कलिका खिलती रही है।।

रात अंधेरी हो, भक्ति सहेली हो, लगता न डर पर्वत पर कभी।
अतिशय से गूँजे यहाँ, सांवरिया का नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।1।।

इस युग के चौबिस तीर्थंकरों में,
मोक्ष गए बीस जिनवर यहाँ से।
कितने करोड़ों मुनियों ने भी,
तप करके शिवालय पाया यहाँ से।।

तीर्थ पुराना है, श्रेष्ठ खजाना है, सबको तिराता है संसार से।
तीरथ की कीरत अमर, कर सकता इंसान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।2।।

जिनधर्म निधि को पाकर के उसका,
सच्चा सदुपयोग करना है हमको।
आपस में मैत्री, दीनों पे करुणा,
का भाव जग में सिखाना है सबको।।

स्वार्थ त्याग करके, शीघ्र जाग करके, जैनत्व की सब रक्षा करो।
तीरथ की रज ''चन्दनामति'' मस्तक का परिधान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।3।।